[1]उदात्तः सञ्ज्ञायां विषये। समजन्ति [2]अस्यामिति समज्या। [3]निषद्या। निपत्या। मन्या। विद्या। सुत्या। शय्या। भृत्या। इत्या। कथं तदुक्तम् 'स्त्रियां भावाधिकारोऽस्ति तेन भार्या प्रसिध्यति' इति ? भावाधिकारो भावव्यापारः वाच्यत्वेन विवक्षितः, न तु शास्त्रीयोऽधिकारः॥

कृञः श च। (१००/३२७७)

करोतेर्धातोः स्त्रियां शः प्रत्ययो भवति। चकारात् क्यप् च। योगविभागोऽत्र कर्तव्यः, क्तिन्नपि यथा स्यात्। क्रिया, कृत्या, कृतिः॥

इच्छा। (१०१/३२७८)

इषेः धातोः [4]शः प्रत्ययो[5] यगभावश्च निपात्यते। [6]इच्छा[7]।

[३१३] परिचर्यापरिसर्यामृगयाटाट्यानामुपसङ्ख्यानम्। (म. भा. २.१५३)

परिचर्या। परिसर्या। मृगया। अटाट्या।

[३१४] जागर्तेरकारो वा। (म. भा. २.१५३)

जागरा, जागर्या[8]॥

अ प्रत्ययात्। (१०२/३२७९)

प्रत्ययान्तेभ्यो धातुभ्यः स्त्रियाम् [9]अकारः प्रत्ययो भवति। [10]क्तिनोऽपवादः। चिकीर्षा। जिहीर्षा। पुत्रीया। पुत्रकाम्या। लोलूया[11]। कण्डूया॥

गुरोश्च हलः। (१०३/३२८०)

हलन्तो यो धातुः गुरुमान्, [12]ततः स्त्रियाम् अकारः प्रत्ययो भवति। क्तिनोऽपवादः। कुण्डा। हुण्डा। ईहा। ऊहा। गुरोः इति किम् ? भक्तिः। हलः इति किम् ? नीतिः॥

षिद्भिदादिभ्योऽङ्। (१०४/३२८१)

षिद्भ्यः भिदादिभ्यश्च[13] स्त्रियाम् अङ् प्रत्ययो भवति। गणपठितेषु भिदादिषु निष्कृष्य प्रकृतयो [14]गृह्यन्ते। जॄष् – जरा। त्रपूष् – त्रपा। भिदादिभ्यः खल्वपि – भिदा। छिदा। [15]विदा। क्षिपा। गुहा गिर्योषध्योः। श्रद्धा। मेधा। [16]गोधा। [17]आरा। हारा। [18]कारा। क्षिया। [19]तारा। धारा। लेखा। रेखा[20]। चूडा[21]। पीडा। वपा। वसा। [22]सृजा। क्रपेः सम्प्रसारणं च (ग. सू. ३६) – कृपा। भिदा [23]विदारणे (ग. सू. २९)। भित्तिः अन्या। छिदा द्वैधीकरणे (ग. सू. ३०)। छित्तिः अन्या। आरा शस्त्र्याम् (ग. सू. ३२)। आर्तिः अन्या। धारा [24]प्रपाते (ग. सू. ३५)। धृतिः अन्या॥

---

1. स च इत्यधिकम् ब. फ. 2. तस्याम् अ. 3. निषीदन्ति अस्याम् इति निषद्या आपणः। निपतन्ति तस्यां निपत्या पिच्छिला भूमिः। मन्यतेऽनया इति मन्या गलपार्श्वशिरा। विदन्ति तया इति विद्या। सूयते अभिषूयते सोमः अस्यां सुत्या अभिषवदिवसः। शेरते तस्यां इति शय्या खट्वादि। भृत्या भरणम्। ईयते गम्यतेऽनया इति इत्या शिबिका क. फ. 4. भावे इत्यधिकम् अ. ब. क. 5. भवति इत्यधिकम् ग. 6. एषणम् इत्यधिकम् ब. 7. क्तिनोऽपवादः इत्यधिकम् ह. 8. इति इत्यधिकम् फ. 9. विषये इत्यधिकम् क. फ, भावे इत्यधिकम् ब. ह. 10. वाक्यमिदं नास्ति ग. 11. पोपूया इत्यधिकम् ह. 12. तस्मात् अ. ब. 13. धातुभ्यः इत्यधिकम् अ. ब. 14. निर्दिश्यन्ते अ. क. फ. ह. 15. विदा नास्ति फ. 16. गुधा ड. 17. आरा नास्ति ब. फ. 18. कारा बन्धने ड. फ. 19. तारा ज्योतिषि अ. ब. फ. ह, तूर्णिः अन्या इत्यधिकम् ड. 20. उखा इत्यधिकम् ह. 21. गवया इत्यधिकम् अ. 22. मृजा ब. ड. फ. ह. 23. विदारणा ह. 24. प्रपातने ड. ह.